निष्काम कर्मयोग - गीता

इसलिए गीता में कहा गया है कि -

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

गीता का स्पष्ट मत है कि अकर्म बुरा है। व्यक्ति का अधिकार केवल कर्म करने में है और उसके कर्म पालन का हेतु फलाकांक्षा से युक्त नहीं होना चाहिए। गीता इसी कर्मों को कुशलता कहती है और यही योग है (योगः कर्मसु कौशलम्)। गीता का विचार है कि समत्वभाव ही योग है (समत्वं योग उच्यते)। समत्व भाव से युक्त व्यक्ति ही फलाकांक्षा से रहित होकर कर्म करता है। ऐसा व्यक्ति सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय, शत्रु-मित्र और मान-अपमान को समान समझकर कर्म करता है। इस प्रकार गीता समत्वभाव से निष्काम होकर कर्म करने का आदेश देती है। इसलिए तो हिरियन्ना का कथन है कि "गीता कर्म में त्याग का उपदेश देती है, कर्म के त्याग का नहीं।

आधुनिक पाश्चात्य नैतिक दर्शन में प्रसिद्ध दार्शनिक Kant ने भी गीता के समान ही निष्काम कर्मयोग का विचार किया है। उनका सिद्धांत कर्तव्य के लिए कर्तव्य (Duty for duty's sake) नाम से जाना जाता है। Kant ने भी इस बात पर बल दिया है कि व्यक्ति को अपने कर्म का सम्पादन कर्तव्य भावना से करना चाहिए, स्वार्थ या सहज प्रवृत्ति से प्रेरित होकर नहीं। किन्तु गीता का कर्मयोग Kant के कर्तव्य के लिए कर्तव्य सिद्धांत से उत्तम है। Kant के नीतिशास्त्र में कर्म केवल साध्य बना रहता है जबकि गीता में कर्म अपने से

उपयुक्त है। Kant के नैतिकशास्त्र में कर्म स्वयं में साध्य बना रहता है जबकि गीता में कर्म अपने से उच्चतर कर्म के लिए सदैव साधनस्वरूप होता है क्योंकि गीता की मान्यता है कि बिना किसी प्रयोजन के मन्दबुद्धि व्यक्ति भी कर्म में प्रवृत्त नहीं होता। Kant के नैतिक दर्शन में नियमपालन ही स्वतः पूर्ण है और मनुष्य नियम के लिए होकर रह जाता है जबकि गीता की दृष्टि में लोककल्याण स्वतः साध्य है और नियम इस साध्य की सिद्धि के लिए साधन-स्वरूप बना रहता है।

पर निष्काम भाव से कर्म करना संभव है? गीता इसका सकारात्मक उत्तर देती है। गीता के अनुसार आत्मलाभ एवं लोकसंग्रह हेतु किये गये कर्म सकाम नहीं होते। इन दोनों लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किया गया और ईश्वर को समर्पित कर्म कभी भी बन्धनकारी नहीं होते जैसे कीचड़ में उत्पन्न कमल कीचड़ से प्रभावित नहीं होता।

पर उपरोक्त अभिप्रेरकों से संचालित कर्म निष्काम कर्म है? गीता इस प्रश्न का उत्तर तो सकारात्मक देती है वास्तव में गीता हमारे संवेगों का ऊर्ध्वीकरण मार्ग से संतुष्ट न होकर उनका मार्गान्तरीकरण चाहती है क्योंकि यह निष्काम कर्म समस्त इच्छाओं की समाप्ति पर बल न देकर परमेश्वर में इनके विलय पर जोर देता है। इनके अनुसार मन में सांसारिक इच्छाओं की प्राप्ति का विचार लिए बिना कर्म करने से इस भौतिक जीवन से मोक्ष हुए पड़ते है जिसको पाना मानव का एकमात्र लक्ष्य है।